विचार बिन्दु

जब पैसा बोलता है तब सत्य मौन रहता है। –कहावत

क्यों नहीं महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय को बंद कर दिया जाए?

महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर की स्थापना का उद्देश्य राजस्थान के किसानों को आधुनिक कृषि तकनीक, वैज्ञानिक ज्ञान और गुणवत्तापूर्ण कृषि शिक्षा उपलब्ध कराना था। कृषि प्रधान राजस्थान में ऐसे विश्वविद्यालयों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। लेकिन आज विश्वविद्यालय की स्थिति को देखते हुए एक असहज सवाल उठना स्वाभाविक है–क्या जिस विश्वविद्यालय के पास अपने मूल दायित्वों को निभाने के लिए पर्याप्त शिक्षक और कर्मचारी ही नहीं हैं, उसे इसी रूप में चलाते रहना चाहिए?

हाल में प्रकाशित एक समाचार के अनुसार विश्वविद्यालय में कुलशैक्षनैतर के कुल 1,586 स्वीकृत पदों में से केवल 481 पदों पर कर्मचारी कार्यरत हैं, जबकि 1,105 पद रिक्त हैं। अर्थात लगभग 70 प्रतिशत पद खाली पड़े हैं। स्थिति की गंभीरता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि शिक्षकों के 435 स्वीकृत पदों में केवल 91 पद भरे हुए हैं यानि कि 80 प्रतिशत पद रिक्त है ।राजस्थान का सबसे पुराना डेयरी एवं खाद्य प्रौद्योगिकी को मात्र दो सहायक प्रोफेसर चला रहे है।

सबसे चिंताजनक स्थिति प्रोफेसरों की है। प्रोफेसर के 38 स्वीकृत पदों में एक भी प्रोफेसर कार्यरत नहीं है। एसोसिएट प्रोफेसर के 100 पदों में केवल 8 तथा असिस्टेंट प्रोफेसर के 297 पदों में केवल 83 पद भरे हैं। जिन शिक्षकों पर उच्च शिक्षा, अनुसंधान और कृषि विस्तार का नेतृत्व करने की जिम्मेदारी है, उन्हीं का विश्वविद्यालय में इतना भारी अभाव है।

ऐसे में सवाल उठता है-क्या केवल भवन, कार्यालय, प्रयोगशालाएं और विश्वविद्यालय का नाम ही किसी संस्था को विश्वविद्यालय बना देते हैं?

कृषि शिक्षा केवल किताबों और परीक्षाओं तक सीमित नहीं हो सकती। इसके लिए प्रयोगशालाएं, खेतों में प्रयोग, अनुसंधान, प्रायोगिक प्रशिक्षण, वैज्ञानिक मार्गदर्शन और किसानों से सीधा संवाद आवश्यक है। जब शिक्षकों के अधिकांश पद खाली हों तो गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की कल्पना कैसे की जा सकती है? विद्यार्थी किससे सीखेंगे, शोध कौन करेगा और किसानों तक नई तकनीक कौन पहुंचाएगा?

एमपीयूएटी का मूल दायित्व केवल विद्यार्थियों को डिग्रियां प्रदान करना नहीं है। कृषि विश्वविद्यालय की सफलता का वास्तविक पैमाना यह होना चाहिए कि उसने किसानों की समस्याओं के समाधान के लिए क्या नया किया। क्या उसने राजस्थान की जलवायु और मिट्टी के अनुरूप नई एवं बेहतर किस्में विकसित कीं? क्या उसने किसानों की उत्पादन लागत कम करने वाली तकनीकें विकसित कीं? क्या उसने पानी की कमी, मिट्टी की गिरती उर्वरता, जलवायु परिवर्तन और बदलते कृषि बाजार जैसी चुनौतियों के समाधान खोजे? क्या विश्वविद्यालय में किया जा रहा अनुसंधान खेत तक पहुंच रहा है?

इन प्रश्नों का उत्तर केवल शोधपत्रों और पुस्तकों में नहीं, बल्कि किसान के खेत में दिखाई देना चाहिए।

किसानों की दशा सुधारने वाला विश्वविद्यालय स्वयं संकट में

किसानों की आय, उत्पादन और जीवन-स्तर सुधारने के उद्देश्य से स्थापित कृषि विश्वविद्यालय यदि स्वयं गंभीर मानव संसाधन संकट से जूझ रहा हो, तो यह केवल एक प्रशासनिक समस्या नहीं है। यह कृषि शिक्षा, अनुसंधान और राज्य के किसानों के भविष्य से जुड़ा प्रश्न है।

विश्वविद्यालय के गैर-शैक्षिणक संवर्ग में भी बड़ी संख्या में पद रिक्त होने की बात सामने आई है। इसका सीधा असर विश्वविद्यालय की प्रशासनिक और तकनीकी कार्यप्रणाली पर पड़ना स्वाभाविक है। यदि शिक्षण संस्थान में शिक्षक नहीं हैं और प्रशासनिक व्यवस्था में भी पर्याप्त कर्मचारी नहीं हैं, तो संस्था से उत्कृष्ट परिणामों की अपेक्षा करना कठिन है।

यह स्थिति सरकार और विश्वविद्यालय प्रशासन दोनों के लिए गंभीर आत्ममंथन का विषय होनी चाहिए।

बंद करने का सवाल क्यों?

यहां विश्वविद्यालय को बंद करने का प्रश्न किसी कर्मचारी, शिक्षक या अधिकारी के विरुद्ध नहीं है। यहव्यवस्था को आईना दिखाने वाला प्रश्नहै।

यदि सरकार के पास विश्वविद्यालय को आवश्यक शिक्षक, वैज्ञानिक और तकनीकी कर्मचारी उपलब्ध कराने के लिए संसाधन नहीं हैं; यदि वर्षों तक हजारों पद खाली पड़े रहते हैं; यदि शिक्षा और अनुसंधान प्रभावित हो रहे हैं; और यदि विश्वविद्यालय अपने मूल उद्देश्यों को प्रभावी ढंग से पूरा नहीं कर पा रहा है, तो सरकार को ईमानदारी से यह तय करना चाहिए कि इस व्यवस्था को इसी रूप में जारी रखने का औचित्य क्या है।

हालांकि विश्वविद्यालय को बंद करना पहला विकल्प नहीं होना चाहिए। उससे पहले व्यापक पुनर्गठन और सुधार का गंभीर प्रयास होना चाहिए। अनावश्यक प्रशासनिक ढांचे को कम करके संसाधनों को शिक्षण, अनुसंधान और कृषि विस्तार पर लगाया जा सकता है। समान प्रकृति के महाविद्यालयों और संस्थानों का पुनर्गठन किया जा सकता है। रिक्त पदों को समयबद्ध तरीके से भरा जा सकता है और प्रत्येक विभाग के लिए स्पष्ट लक्ष्य तथा जवाबदेही निर्धारित की जा सकती है।

किसी विश्वविद्यालय को केवल इसलिए जीवित रखना उचित नहीं है कि वह दशकों से अस्तित्व में है। उसे इसलिए जीवित रहना चाहिए क्योंकि वह समाज, विद्यार्थियों और किसानों के लिए उपयोगी है।

किसानों की आय, उत्पादन और जीवन-स्तर सुधारने के उद्देश्य से स्थापित कृषि विश्वविद्यालय यदि स्वयं गंभीर मानव संसाधन संकट से जूझ रहा हो, तो यह केवल एक प्रशासनिक समस्या नहीं है। यह कृषि शिक्षा, अनुसंधान और राज्य के किसानों के भविष्य से जुड़ा प्रश्न है।

सरकार को देना चाहिए समयबद्ध सुधार का अवसर

एमपीयूएटी को बंद करने की बात अंतिम विकल्प होनी चाहिए, पहला नहीं। सरकार को विश्वविद्यालय को सुधारने का स्पष्ट और समयबद्ध अवसर देना चाहिए।

अगले एक वर्ष में सभी आवश्यक शिक्षकीय पदों को भरने की प्रक्रिया पूरी की जाए। प्रत्येक महाविद्यालय में शिक्षक-विद्यार्थी अनुपात को निर्धारित मानकों के अनुरूप लाया जाए। अनुसंधान की गुणवत्ता और उसके खेत तक पहुंचने का स्वतंत्र मूल्यांकन कराया जाए। कृषि प्रसार कार्यक्रमों की प्रभावशीलता की समीक्षा हो तथा विश्वविद्यालय के व्यय और उपलब्धियों का सार्वजनिक मूल्यांकन किया जाए।

इसके साथ यह भी देखा जाना चाहिए कि विश्वविद्यालय पर होने वाला प्रत्येक व्यय किसानों और विद्यार्थियों के हित में कितना उपयोगी साबित हो रहा है। यदि प्रशासनिक खर्च बढ़ता रहे और शिक्षा, अनुसंधान तथा कृषि विस्तार कमजोर होते जाएं, तो व्यवस्था में सुधार के बजाय केवल बजट बढ़ाने का कोई अर्थ नहीं है।

यदि निर्धारित अवधि में ठोस सुधार नहीं होता, तो विश्वविद्यालय के वर्तमान स्वरूप पर पुनर्विचार किया जाना चाहिए। आवश्यकता पड़ने पर इसके महाविद्यालयों और संस्थानों का किसी अन्य कृषि विश्वविद्यालय के साथ विलय अथवा व्यापक पुनर्गठन भी किया जा सकता है।

उच्च शिक्षा और पेंशन-सरकारी प्राथमिकताओं पर सवाल

एमपीयूएटी की समस्या को राज्य की उच्च शिक्षा व्यवस्था और विश्वविद्यालयों के कर्मचारियों एवं पेंशनरों की समस्याओं से अलग करके नहीं देखा जा सकता। एक ओर विश्वविद्यालयों में हजारों पद वर्षों से रिक्त पड़े हैं, वहीं दूसरी ओर सेवानिवृत्त कर्मचारियों और पेंशनरों को भी समय पर उनके वैधानिक लाभ प्राप्त करने के लिए संघर्ष करना पड़ता है।

पेंशन किसी सरकार की कृपा नहीं, बल्कि सेवानिवृत्त कर्मचारी की दीर्घकालीन सेवा के बदले प्राप्त वैधानिक अधिकार है। इसलिए पेंशन का भुगतान समय पर होना और सेवानिवृत्ति लाभों का निर्धारित समय में निपटारा होना प्रशासन की जिम्मेदारी है।

दुर्भाग्य से जब पेंशन, महंगाई भत्ते अथवा अन्य सेवानिवृत्ति लाभों के लिए पेंशनरों को बार-बार ज्ञापन देना पड़े, अधिकारियों से मिलना पड़े और न्यायालय की शरण तक लेनी पड़े, तो यह व्यवस्था की संवेदनशीलता पर प्रश्न खड़ा करता है। जीवन के अंतिम पड़ाव में पहुंचे पेंशनरों को अपने ही अधिकारों के लिए संघर्ष करना पड़े, यह किसी भी कल्याणकारी शासन के लिए संतोषजनक स्थिति नहीं कही जा सकती।

उच्च शिक्षा में रिक्त पद और विश्वविद्यालयों के पेंशनरों की लंबित समस्याएं एक ही बड़ी तस्वीर की ओर संकेत करती हैं-क्या सरकार उच्च शिक्षा संस्थानों को उनकी वास्तविक आवश्यकता के अनुरूप संसाधन, मानव शक्ति और प्रशासनिक प्राथमिकता दे रही है?

सरकार के लिए यह आवश्यक है कि वह केवल घोषणाओं और आश्वासनों तक सीमित न रहे, बल्कि निर्णयों का समयबद्ध क्रियान्वयन सुनिश्चित करे। विश्वविद्यालयों में खाली पद और पेंशनरों की लंबित समस्याएं दोनों ही प्रशासनिक जवाबदेही की परीक्षा हैं।

विश्वविद्यालय किसानों के लिए है, किसानों पर बोझ बनने के लिए नहीं

एमपीयूएटी जैसी संस्था का महत्व केवल उदयपुर या मेवाड़ तक सीमित नहीं है। राजस्थान जैसे कृषि प्रधान राज्य में कृषि विश्वविद्यालयों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। लेकिन किसी संस्था का महत्व जितना अधिक होता है, उससे अपेक्षाएं और जवाबदेही भी उतनी ही अधिक होती हैं।

आज सबसे बड़ा प्रश्न यही है-क्या एमपीयूएटी किसानों की बदलती जरूरतों के अनुरूप ज्ञान, तकनीक और समाधान उपलब्ध करा रहा है?

यदि उत्तर हां है, तो उसे और अधिक मजबूत किया जाना चाहिए। सरकार को पर्याप्त शिक्षक, वैज्ञानिक और तकनीकी कर्मचारी उपलब्ध कराने चाहिए तथा विश्वविद्यालय को उत्कृष्ट कृषि शिक्षा और अनुसंधान का केंद्र बनाना चाहिए।

यदि उत्तर संतोषजनक नहीं है, तो केवल परंपरा के नाम पर वर्तमान व्यवस्था को ढोते रहने का औचित्य क्या है?

इसलिए लेख के शीर्षक में पूछा गया सवाल वास्तव में विश्वविद्यालय को बंद करने की मांग से अधिक सरकार और विश्वविद्यालय प्रशासन को जगाने वाली चेतावनी है–

क्यों नहीं महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय को बंद कर दिया जाए?

इस प्रश्न का बेहतर उत्तर यही होना चाहिए–

बंद नहीं, पहले इसे पूरी क्षमता के साथ चलाकर दिखाइए। यदि सरकार इसे आवश्यक संसाधन, शिक्षक और वैज्ञानिक उपलब्ध कराकर उत्कृष्ट संस्था नहीं बना सकती, तो फिर इसके वर्तमान स्वरूप को बनाए रखने का औचित्य भी स्पष्ट कीजिए।

किसानों के हित में स्थापित विश्वविद्यालय यदि स्वयं मानव संसाधन और प्रशासनिक संकट से जूझता रहे, तो यह केवल एक विश्वविद्यालय की समस्या नहीं है। यह राजस्थान की कृषि शिक्षा, अनुसंधान, विद्यार्थियों, वैज्ञानिकों और लाखों किसानों के भविष्य से जुड़ा प्रश्न है।

अब समय आ गया है कि सरकार इस प्रश्न से बचने के बजाय इसका स्पष्ट उत्तर दे-या तो विश्वविद्यालय को उसकी पूरी क्षमता के साथ चलाइए, या फिर उसके वर्तमान स्वरूप पर पुनर्विचार कीजिए।

–अतिथि सम्पादक,
प्रोफेसर (डा.) पी. सी. कंठालिया
पूर्व विभागाध्यक्ष (मृदा विज्ञान) एवं मुख्य वैज्ञानिक
महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर

कुंभ बनाम शिक्षा का सवाल : क्या आस्था और विकास को आमने-सामने खड़ा करना उचित है?

विनोद पाठक

सुप्रीम कोर्ट के न्यायमूर्ति प्रसन्ना बी. वराले की एक टिप्पणी ने कुंभ और शिक्षा को लेकर बहस छेड़ दी है। नासिक में एक कार्यक्रम के दौरान उन्होंने मराठी माध्यम के स्कूलों की खराब होती स्थिति पर चिंता जताई और कहा कि नासिक कुंभ के लिए निर्धारित करीब 32 हजार करोड़ रुपए में से केवल 0.1 प्रतिशत राशि भी खर्च की जाती तो 100 से अधिक मराठी स्कूलों को बचाया जा सकता है। शिक्षा की स्थिति को लेकर न्यायमूर्ति वराले की चिंता अपनी जगह बिल्कुल जायज है। स्कूलों की हालत खराब हो, बच्चे सुविधाओं से वंचित हों और शिक्षक तथा संसाधनों की कमी हो तो सरकार से सवाल पूछा ही जाना चाहिए।

आखिर शिक्षा किसी भी समाज के भविष्य का आधार है, लेकिन इसी के साथ एक बड़ा सवाल यह भी है कि क्या शिक्षा की समस्या का समाधान कुंभ के बजट में ही तलाशना चाहिए? क्या एक धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजन पर होने वाला खर्च स्वाभाविक रूप से शिक्षा के लिए संभावित नुकसान है? अगर किसी राज्य के स्कूलों को तत्काल धन की जरूरत है तो क्या उसके लिए सरकार के पास कुंभ के अलावा कोई दूसरा बजट नहीं है? यहीं से इस बहस को थोड़ा व्यापक बनाने की जरूरत महसूस होती है।

अब प्रयागराज महाकुंभ-2025 को लें। इस आयोजन के लिए करीब 7,000 करोड़ रुपए उत्तर प्रदेश व केंद्र सरकार ने विकास और आयोजन संबंधी कार्यों पर खर्च किए, लेकिन महाकुंभ ने आस्था के साथ अर्थव्यवस्था को भी बड़ा बूस्ट दिया। एक अनुमान के अनुसार इससे करीब 2 लाख करोड़ रुपए की आर्थिक गतिविधि हुईं। व्यापारिक संगठनों के आकलन 3.25 लाख करोड़ तक का है। महाकुंभ ने पर्यटन, परिवहन, होटल, व्यापार और सेवा क्षेत्र को गति दी। लाखों लोगों की आजीविका को सहारा मिला। हालांकि, कुंभ भारत की कोई नई बनाई गई परंपरा नहीं है। कुंभ को केवल एक सरकारी कार्यक्रम की तरह देखना शायद उचित नहीं होगा। सरकार आयोजन की व्यवस्था करती है, लेकिन कुंभ की असली ताकत करोड़ों श्रद्धालुओं की भागीदारी है।

बड़ा सवाल यह है कि क्या आस्था और शिक्षा एक-दूसरे के विरोधी हैं? यह शायद इस बहस का सबसे महत्वपूर्ण सवाल है। भारत में मंदिर और धार्मिक संस्थाएं केवल पूजा-पाठ तक सीमित नहीं रही हैं। अनेक मंदिर और धार्मिक ट्रस्ट शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक सेवा के क्षेत्र में भी काम करते हैं। तिरुमला तिरुपति देवस्थानम इसका बड़ा उदाहरण है। वह स्कूलों, कॉलेजों, संस्कृत एवं प्राच्य शिक्षा संस्थानों, अन्य शैक्षणिक संस्थाओं के संचालन और सहयोग से जुड़ा है। देश के अलग-अलग हिस्सों में मंदिरों, मठों और धार्मिक संस्थाओं द्वारा गुरुकुल, छात्रावास, विद्यालय, संस्कृत पाठशालाएं और आधुनिक शिक्षण संस्थान चलाए जाते हैं।

फिर सवाल यह क्यों न हो कि धार्मिक संस्थाओं को शिक्षा व स्वास्थ्य में और अधिक योगदान के लिए कैसे प्रेरित किया जाए? अगर मंदिर शिक्षा में पैसा लगाता है तो उसका स्वागत होना चाहिए। अगर कोई धार्मिक संस्था अस्पताल बनाती है तो उसका स्वागत होना चाहिए। उसी तरह सरकार यदि किसी बड़े धार्मिक आयोजन के दौरान सड़क, पुल, सीवेज, अस्पताल और सार्वजनिक सुविधाओं का निर्माण करती है तो उसका भी मूल्यांकन उसके परिणामों के आधार पर होना चाहिए।

स्कूलों की हालत खराब है तो जिम्मेदारी किसकी है? यह सवाल सरकार से पूछा जाना चाहिए। अगर किसी जिले में स्कूल जर्जर हैं तो उनके लिए शिक्षा विभाग का बजट क्या कर रहा है? अगर शिक्षक नहीं हैं तो नियुक्तियां क्यों नहीं हो रही हैं? अगर भवन की जरूरत है तो निर्माण के लिए धन क्यों नहीं है? अगर बच्चों को अच्छी शिक्षा नहीं मिल रही तो उसकी जवाबदेही किसकी है? क्या इन समस्याओं का समाधान केवल कुंभ का बजट घटाकर किया जा सकता है? उत्तर होगा- बिल्कुल नहीं। कुंभ का बजट एक विशेष आयोजन और उससे जुड़े बुनियादी ढांचे के लिए है। शिक्षा का बजट अलग है। केंद्र और राज्य सरकारों के पास शिक्षा के लिए अलग-अलग योजनाएं और नियमित बजट हैं। इसलिए यह तर्क कि कुंभ पर खर्च हुआ पैसा सीधे स्कूलों में लगा दिया जाता तो शिक्षा की समस्या हल हो जाती, अपने आप में बहुत सरल निष्कर्ष होगा।

जरा, नासिक कुंभ के लिए निर्धारित 32,000 करोड़ रुपए का उदाहरण लें। यदि इसका 0.1 प्रतिशत निकाला जाए तो राशि 32 करोड़ रुपए होती है। सवाल यह है कि यदि 32 करोड़ से 100 स्कूलों की समस्या हल हो सकती है तो क्या सरकार के पास शिक्षा के लिए 32 करोड़ रुपए उपलब्ध नहीं होने चाहिए? अगर नहीं हैं तो समस्या कुंभ नहीं, बजट प्राथमिकताओं और प्रशासनिक व्यवस्था की है। एक और सवाल यह भी उठता है। क्या भारत में धार्मिक आयोजनों को देखने का हमारा नजरिया समान है? कुंभ हिंदू आस्था का बड़ा आयोजन है। इसलिए उसके खर्च पर सवाल उठना स्वाभाविक रूप से गलत नहीं है। सार्वजनिक धन है तो उसका हिसाब होना चाहिए, लेकिन यही कसौटी हर बड़े धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक आयोजन पर लागू होनी चाहिए। सवाल कुंभ के खिलाफ नहीं होना चाहिए। सवाल सार्वजनिक धन के इस्तेमाल की पारदर्शिता पर होना चाहिए। कुंभ पर कितना खर्च हुआ? किस मद में हुआ? उसमें से कितना स्थायी इंफ्रास्ट्रेक्चर बना? उसका उपयोग अगले दस या बीस साल तक स्थानीय लोगों को कैसे मिलेगा? कुंभ से स्थानीय कारोबार को कितना लाभ हुआ? कितने लोगों को रोजगार मिला? इन सवालों के जवाब सार्वजनिक होने चाहिए। यही स्वस्थ लोकतांत्रिक बहस होगी। भारत को शिक्षा भी चाहिए और संस्कृति भी। आधुनिक इंफ्रास्ट्रेक्चर भी चाहिए और अपनी सभ्यतागत पहचान भी। इनमें से किसी एक को चुनना जरूरी नहीं है। एक बच्चा अच्छा स्कूल पाए, यह भी जरूरी है। एक तीर्थस्थल पर आने वाले श्रद्धालु को सुरक्षित सड़क और स्वच्छ पानी मिले, यह भी जरूरी है। किसी गांव के बच्चे को छात्रवृत्ति मिले, यह भी जरूरी है। किसी प्राचीन सांस्कृतिक आयोजन की व्यवस्था आधुनिक बने, यह भी जरूरी है। विकास का अर्थ किसी एक आवश्यकता को दूसरी आवश्यकता के विरुद्ध खड़ा करना नहीं है।

– विनोद पाठक,
वरिष्ठ पत्रकार

पारस्परिक प्रेम, सोहार्द व स्नेह का अटूट बंधन राखी

डॉ. जे.के. गर्ग

रक्षाबंधन का अर्थ है–किसी को अपनी रक्षा के लिए बांध लेना। इसीलिए इस पर्व पर राखी बांधते समय बहन कहती है हे भैया ! मैं तुम्हारी शरण में हूँ, मेरी सब प्रकार से रक्षा करना। फलस्वरूप भाई भी अपनी बहन को जीवन पर्यन्त रक्षा करने का वचन देते हैं। भारतीय परम्परा में विश्वास का बन्धन ही प्रमुख है और रक्षाबंधन इसी विश्वास का बन्धन है। इस पर्व पर बहिन के राखी बांधने पर मात्र रक्षा का वचन ही नहीं देता वरन् प्रेम, समर्पण, निष्ठा व संकल्प के जरिए हृदयों को बाँधने का भी वचन देता है। पहले रक्षाबंधन बहन-भाई तक ही सीमित नहीं था, अपितु आपत्ति आने पर अपनी रक्षा के लिए अथवा किसी की आयु और आरोग्य की वृद्धि के लिये किसी को भी रक्षा-सूत्र बांधा या भेजा जाता था। भगवान कृष्ण ने भी गीता में कहा है कि- "मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव"- अर्थात 'सूत्र' अविच्छिन्नता का प्रतीक है, क्योंकि रक्षा के बिखरे हुए मोतियों को अपने में पिरोकर एक माला के रूप में एकाकार बनाता है। माला के मणियों की तरह रक्षा-सूत्र भी लोगों को जोड़ता है।

गीता में भी लिखा गया है कि जब संसार में नैतिक मूल्यों में कमी आने लगती है, तब ज्योतिर्लिंग भगवान शिव प्रजापति ब्रह्मा द्वारा धरती पर पवित्र धागे भेजते हैं, जिन्हें बहनें मंगलकामना करते हुए भाइयों की कलाई पर बाँधती हैं और भगवान शिव उन्हें नकारात्मक विचारों से दूर रखते हुए दु:ख और पीड़ा से निजात दिलाते हैं। जन्मों का ये बंधन है, स्नेह और विश्वास का..और भी गहरा हो जाता है ये रिश्ता..जब बंधता है धागा रक्लोग पिछली कडुवाहटों को भूलकर आपसी प्रेम को महत्त्व देने लगते हैं।

रक्षा बंधन को जन चेतना सामाजिक सद्भाव और सामाजिक क्रांति के माध्यम के रूप में मनाये। भौतिकवाद टीवी मोबाइल सोशियल मीडिया के अत्याधिक उपयोग या दुरुपयोग के माहोल के अंदर समूचे देश के अंदर बलात्कार, अपहरण, योनाचार एवं स्त्री सुरक्षा-अस्मिता को बनाये रकने के लिये कठोर कानून भी बनाये गये और उनमें म्रत्यु दंड तक की सजा भी रखी गयी। इन सब कोशिशों के बावजूद बलात्कार, अपहरण जैसी नारकीय घटनाओं में कोई कमी नहीं आई वरन ऐसी घटनायें दिन प्रतिदिन बढ़ती ही रही। सच्चाई यही है कि ऐसी अमानवीय घटनाओं को कानून, पुलिस या सरकार के माध्यम से हल नहीं किया जा सकता है। हमारे देश के लिये कलंक बन चुकी इन विभत्स घटनाओं को रोकने का एकमात्र रास्ता जन जागृति,जन अभियान,जन चेतना और सामाजिक चेतना ही है। समाज के युवाओं को रोजगार देने के साथ साथ उनमें उनमें नैतिकता के संस्कार में वृद्धि करने की जरूरत है।

समाज में व्याप्त नारी की असहजता एवं असुरक्षा को देखते हुए क्या यह तर्क संगत नहीं होगा कि राखी के पावन उत्सव पर बहन जब अपने भाई की कलाई पर राखी बांधे तो वह अपने भाई से यह शपथ और वचन लेकर राखी बांधे कि भैया, जैसे आप मुझे पवित्र और स्नेहपूर्ण दृष्टि से देखते हैं एवं मेरी रक्षा का संकल्प लेते हैं वैसे ही आप इस राखी को मुझ से बंधवाते समय अपने सच्चे मन में यह प्रतिज्ञा करो कि आप केवल मेरी ही नहीं किन्तु भारत की प्रत्येक नारी एवं युवती को बहन की तरह निर्मल, पवित्र और स्नेह पूर्ण दृष्टि से ही देखोगे। अगर आप मुझसे यह वादा करते हो तब ही में आपकी कलाई पर राखी बांधूगी। मुझे यह वचन दें कि आप नारी की अस्मिता के रक्षा करेगें। रक्षा बंधन को जन चेतना सामाजिक सद्भाव और सामाजिक क्रांति का माध्यम के रूप में मनाये जाने पर भारतियों के मन के अंदर धीमें ही सही एक न एक दिन नारीयों के लिये सम्मान की भावना पनपेगी।

रक्षा बंधन को बहन बेटियों के सुरक्षा दिवस के रूप में मनाये जाने पर उनके अंदर की अमानुषिक भावनाये भी धीमें-धीमें खत्म हो जायेगी इससे देश के अंदर सामाजिक जन क्रांति जरुर आयेगी। कुछ समय बाद हम देखेगें कि भारत के पुरुष समाज में बहन-बेटी, महिला में अपनी सगी बहन को छवी को देखेगा तब उसके मन में उपजी कलुषित विचार और सोच नष्ट ओ जायेगी। जब हर बहन अपने भाई से ऐसी ही प्रतिज्ञा करवायेगी तो अवश्य ही वो समय धीमें-धीमें ही सही निसंदेह आयेगा यह सोच कानून से ज्यादा प्रभावी होगी। एक समय अवश्य आयेगा जब आदमी के दिल में दानवी कलुषित अमानुषिक विचारों की जगह राम राज्य स्थापित होगा जिसके फलस्वरूप देश की हर माता-बहनें एवं बेटियां सुरक्षित रहेगीं एवँ देश को बलात्कार अपहरण योनाचार जैसी अमानवीय घटनाओं से छुटकारा मिल जायेया। वो दिन बहुत दूर नहीं होगा जब भविष्य में अपहरण, यौनाचार एवं युवतियों से अमानवीय व्यवाहर की ह्रदय विदारक दुखद घटनायें घटित ही नहीं होगीं। देश के अंदर राखी को सामाजिक क्रांति का माध्यम बनाने के लिये हम सभी का पुनीत कर्तव्य है कि इन भावनाओं को अपने स्तर पर फेसबुक..., ट्विटर, सोशल मीडिया..., प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक संचार माध्यम..., लोकल चेनल्स..., स्वयं सेवी संस्थाओं, स्कूलों, कॉलेजों, धार्मिक आयोजनों, सामाजिक आयोजनों पर प्रचारित और प्रसारित करें। धार्मिक नेताओं साधू संतों से भी अनुरोध करें कि वे भी इसका प्रसार करें। इस संदेश का ऑडियो बनाये, वीडियो बनाकर यूट्यूब पर अपलोड करें, पारस्परिक वार्तालाप करें। स्थानीय प्रशासन से सहयोग लें। राज्य सरकारों और केन्सेद्रीय सरकार से भी अनुरोध करें कि वे सभी शिक्षण संस्थाओं में परिपत्र भेज कर इस वर्ष 28 अगस्त 2026 को मनाये जाने वाले रक्षा बंधन पर्व पर बहन-बेटियों के सुरक्षा दिवस के रूप में मनायें।

रक्षाबंधन को मनाएं बुजर्गों के सुरक्षा कवच के रूप में

गुरु शिष्य को रक्षासूत्र बाँधता है तो शिष्य गुरु को। भारत में प्राचीन काल में जब स्नातक अपनी शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात गुरुकुल से विदा लेता था तो वह आचार्य का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए उसे रक्षासूत्र बाँधता था जबकि आचार्य अपने विद्यार्थी को इस कामना के साथ रक्षासूत्र बाँधता था कि उसने जो ज्ञान प्राप्त किया है वह अपने भावी जीवन में उसका समुचित ढंग से प्रयोग करे ताकि वह अपने ज्ञान के साथ-साथ आचार्य की गरिमा की रक्षा करने में भी सफल हो। राखी को मनाये बुजुर्गों के सम्मान एवं के सुरक्षा दिवस के रूप में पिछले कई सालों मे हमरे देश, में जब हम समृद्ध परिवार बुजुर्ग माताओं-पिताओं को अपना शेष जीवन जीने के लिये वृद्ध आश्रम जाते हुए देखते हैं तो उस समय हम सभी के दिल में दु:ख और विषाद उत्पन्न होता है एवं ह्रदय कराह उठता है। इस समस्या का समाधान करने और माता-पिता के बुढ़ापे को सुखद बनाने हेतु हम रक्षा बंधन के पर्व का बेहतरीन तरीके से उपयोग कर सकते हैं। रक्षा बंधन के दिन प्रत्येक पुत्र-पुत्री, परिवार के सभी अनुज परिजन अपने अपने माता-पिता, नाना नानी, दादा दादी, अंकल आंटी और समस्त गुरुजनों आचार्यों और अग्रजो की कलाई पर राखी बांध कर यह शपथ लें कि वें अपने माता पिता और परिवार के सभी बड़े-बूढ़े यथा माता-पिता, दादा-दादी, नाना-नानी आदि की सभी तरह से देखभाल करेगें, उनकी समस्त सुख सुविधाओं का ख्याल रखेंगे एवं उनके प्रति हर प्रकार के दायित्वों का निर्वाह निष्ठा पूर्वक करते हुए उनकी सेवा सुश्रुषा करेगें जिससे उनका शेष जीवन निर्विघ्न एवं सुखद बनें। यही शपथ एवं प्रण परिवार के बुजेगों का सुरक्षा कवच बनेगा। राखी पर उनको भरोसा दें कि उनके बुढ़ापे में वे उनकी पूरी तरह से देखभाल और सेवा करेगें एवँ कभी भी उनको अकेला नहीं छोढ़ेगें। अत: आइये इस रक्षाबन्धन के पर्व पर बुजर्गों को सुरक्षा कवच प्रदान करेगें।

आईये हम सभी एक-दूसरे को रक्षा सूत्र में बांधे एवं राष्ट्र निर्माण तथा राष्ट्र कल्याण हेतु कार्य करने का संकल्प भी करें। यदि आप इन विचारों से सहमति रखते हैं तो अपने आस पास के सभी लोगों तक इस मैसेज को पहुंचायें। रक्षा बंधन को सामाजी जन कान्ति के रूप में मनाने की शपथ ले।

– डॉ. जे. के. गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक
कालेज शिक्षा।

चूरू में ईद मिलादुन्नबी पर जुलूस निकाला

चूरू, (निसं)। जिला मुख्यालय पर बुधवार को पैगंबर हजरत मोहम्मद साहब के जन्मदिवस पर ईद मिलादुन्नबी के अवसर पर जुलूस ए मोहम्मदी निकाला गया। शहर के तेलियों की मस्जिद के पास स्थित मदरसा दारूम से शहर इमाम मो. अनवार नदीम उल कादरी के नेतृत्व में निकाले गए जुलूस को विधायक हरलाल सहारण, राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष रफीक मंडेलिया, भाजपा जिलाध्यक्ष बसंत शर्मा और मोहम्मद अबरार अहमद कादरी ने रवाना किया। इस दौरान विधायक हरलाल सहारण और रफीक मंडेलिया एक ही गाड़ी में सवार होकर जुलूस में शामिल हुए। जुलूस के दौरान शहर में आपसी भाईचारे और सामाजिक सद्भाव की मिसाल देखने को मिली। नई सड़क स्थित 8 नंबर स्कूल के पास कॉम काजियान कमेटी के सदर संजय भाटी ने शहर इमाम अनवार अहमद कादरी और रफीक मंडेलिया का साफा व माला पहनाकर स्वागत किया। जुलूस का जगह-जगह लोगों ने पुष्प वर्षा कर स्वागत किया। जुलूस का चूरू शहर के 36 कौमों के लोगों ने पुष्प वर्षा कर स्वागत किया। जुलूस में विभिन्न राजनीतिक दलों और सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि भी शामिल हुए। कांग्रेस से विधानसभा प्रभारी भीमराज जाखड़, पूर्व सभापति गोविंद महनसरिया, नारायण बालाण, शहर ब्लॉक अध्यक्ष असलम खोखर, पंचायत समिति प्रतिपक्ष नेता धर्मेंद्र बुडानिया, मोहम्मद हुसैन निर्बाण, जमील चौहान, रमजान खान, शिवकुमार शर्मा, गोकुल शर्मा, विमल शर्मा सहित बड़ी संख्या में शहर के गणमान्य जन मौजूद रहे।

राशिफल गुरूवार 27 अगस्त, 2026

पंडित अनिल शर्मा

सावन मास, शुक्ल पक्ष, चतुरदशी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2083, धनिष्ठा नक्षत्र रात्रि 2:16 तक, शोभन योग प्रात: 7:55 तक, वणिज करण प्रात: 9:09 तक, चन्द्रमा आज दिन 1:36 से कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-मकर, मंगल-मिथुन, बुध-सिंह, गुरू-कर्क, शुक्र-कन्या, शनि-मीन राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज भद्रा प्रात: 9:09 से रात्रि 9:28 तक है। आज शुक्ल यजुर्वेदी अर्थववेदी उपाकर्म, चान्द पूर्णिमा व्रत, नारेली पूर्णिमा, ध्यग्रीव जयन्ती है। पंचक दिन 1:36 से आरम्भ होंगे।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 7:43 तक, चर 10:53 से 12:29 तक, लाभ-अमृत 12:28 से 3:39 तक, शुभ 5:14 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:08, सूर्यास्त 6:49

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा।